

मोहल्ला कमिटी क्या है?

इस मुद्दे पर हम सभी सहमत हैं कि हमें अब पहले से कहीं अधिक सामुदायिक पुलिसिंग की अवधारणा को फिर से प्रज्वलित करने की आवश्यकता है जो पुलिस और जनता के बीच विश्वास-आधारित संबंध को प्रोत्साहित करती है। अफवाह फैलाने, नफरत फैलाने वाले दुष्प्रचार का मुकाबला करने और हिंसा को रोकने के लिए मोहल्ला कमिटियां सबसे बेहतर विकल्प हैं। लेकिन हम इसे कैसे कर पाते हैं?

मोहल्ला कमिटियां मिश्रित-समुदाय के समूह हैं जिनमें पड़ोस के सदस्य, विशेष रूप से महिलाएं, और पुलिस थाना क्षेत्र में विभिन्न व्यवसायों और स्थानों से अन्य नागरिक समाज के सदस्य शामिल हैं। ये सदस्य झड़पों को रोकने के लिए रोजाना पुलिस और प्रशासन के संपर्क में रहते हैं। जब भी अफवाह फैलना शुरू होती है और जब भी संघर्ष होता है, कमिटी के सदस्य एक साथ आते हैं और पुलिस और प्रशासन पर समय पर कार्रवाई करने के लिए 'नैतिक दबाव' डालते हैं।

ये समूह दशकों से कुछ क्षेत्रों में सक्रिय हैं। यह सब भिवंडी, 1984 में शुरू हुआ, जब भिवंडी के तत्कालीन उप पुलिस आयुक्त सुरेश खोपड़े ने विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमि के नागरिकों और पुलिस के बीच इस सक्रिय इंटरफ़ेस की शुरुआत की। यह विचार पावरलूम शहर में कड़वी सांप्रदायिक हिंसा को संबोधित करने के लिए था। 75 स्थानीय कमिटियों, जिनमें से प्रत्येक में सभी समुदायों के 50 सदस्य शामिल थे, ने धीरे-धीरे काम करना शुरू किया और सामूहिक पुलिसिंग की अवधारणा विकसित की। इन कमिटियों का प्रभाव ऐसा था कि उन्होंने क्षेत्र में 1992-93 की मुंबई हिंसा के प्रभाव को भी कम कर दिया।

मुंबई में भी मोहल्ला कमिटियों की अवधारणा ने बातचीत और विचारों को साझा करने में सक्षम बनाया। लोगों ने उनकी पहल के महत्व का अनुभव किया और उप-निरीक्षकों और निरीक्षकों सहित पुलिस अधिकारियों ने महसूस किया कि जनता के समर्थन के बिना उनका काम बहुत मुश्किल होगा।

मुंबई के सांप्रदायिक रूप से संवेदनशील इलाकों में 24 सक्रिय मोहल्ला कमिटियों ने शहर के इतिहास में एक नया अध्याय शुरू किया। पूर्व पुलिस आयुक्त, जूलियो रेबेरो, तत्कालीन पुलिस आयुक्त, सतीश साहनी और सुशोभा बर्वे जैसे वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ताओं ने इसे स्थापित करने के लिए काम किया। इस बार राजनेताओं और असामाजिक तत्वों के प्रभाव से मुक्त नागरिकों द्वारा स्वयं की गई पहल पर जोर दिया गया। पुलिस पर राजनेताओं के नियंत्रण को हटाने और समाज द्वारा सम्मानित गैर-राजनीतिक लोगों द्वारा शासित निकाय के तहत बाद में रखने की आवश्यकता को दृढ़ता से महसूस किया गया था। राष्ट्रीय पुलिस आयोग ने भी सालों पहले इस तरह के कदमों की सिफारिश की थी, लेकिन सिफारिश को लागू करने के लिए कोई कदम नहीं उठाया गया।

यह मोहल्ला कमिटियों का श्रेय है कि इन स्थानीय पहलों ने बामियान बुद्ध की घटना (2001), राजनीतिक नेताओं की गिरफ्तारी, सिमी पर प्रतिबंध, न्यूयॉर्क और नई दिल्ली में हुए आतंकवादी हमलों व अफगानिस्तान पर हमले के बाद की तनावपूर्ण स्थितियों को सफलतापूर्वक दूर किया।

हम बॉम्बे मोहल्ला कमिटी ट्रस्ट द्वारा जीवित रखी गई इन कमिटियों के अनुभवों का स्वागत करते हैं और अगले कुछ हफ्तों में उनके साथ बातचीत करेंगे। आज सक्रिय और स्वतंत्र कमिटियां मोहल्ला कमिटी मूवमेंट ट्रस्ट (एमसीएमटी) द्वारा चलाई जाती हैं, जहां कार्यकारी अध्यक्ष पूर्व वरिष्ठ पुलिसकर्मी हैं, केएल प्रसाद (जूलियो रिबेरो, पूर्व सीपी और डीजीपी पंजाब अध्यक्ष और सक्रिय सदस्य हैं)। आधिकारिक मोहल्ला कमिटी इस प्रयास से अलग है जहां नागरिक प्रमुख भूमिका निभाते हैं।

यह कैसे काम करता है?

थाना स्तर पर नियमित गतिविधियों से मोहल्ला कमिटियां कार्य करती हैं। लोगों के दैनिक जीवन को बेहतर बनाने के लिए कमिटी महीने में दो बार सक्रिय रूप से बैठक करती है। इसकी गतिविधियों में पुस्तकालय और फिल्म शो, सामुदायिक खाद्य स्टालों की स्थापना, सामाजिक न्याय के राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय दिवसों का पालन करना, ईद और दिवाली का त्योहार मनाना शामिल है। अंतर-धार्मिक/विश्वास प्रार्थनाओं, विभिन्न बैठकों में शांति और सद्भाव के विचारों को संप्रेषित करना, सभी समुदायों के विभिन्न समूहों के बीच ब्रिज बनाना, महिलाओं के प्रयासों को मजबूत करना, स्कूल छोड़ने वालों के लिए कक्षाएं लगाना, सभी समुदायों के सदस्यों में सद्भाव के लिए अन्य खेलों के साथ क्रिकेट की भी व्यवस्था की।

मुख्य रूप से, मोहल्ला कमिटियां (ए) क्षेत्र में पुलिस कार्य के संबंध में शिकायतों से संबंधित मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करती हैं; (बी) स्वास्थ्य, पानी की उपलब्धता, पर्यावरण और कचरा निपटान जैसे नागरिक मुद्दे; (सी) बच्चों और युवाओं के लिए शैक्षिक सुविधाएं; (डी) त्योहारों को मनाने जैसी सांप्रदायिक सद्भाव को बढ़ावा देने वाली गतिविधियां करती हैं। इसके बावजूद, दिन-प्रतिदिन के कामकाज में एक समान पैटर्न नहीं है। अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग व्यक्तियों द्वारा अपनी तरह से काम किया जाता है इस वजह से उनकी अलग-अलग समस्याएं होती हैं।

कुछ उदाहरण

- माहिम में लोग बच्चों पर दंगों के प्रभाव को लेकर चिंतित थे।
- डीएन नगर में सदस्यों ने बस्तीवासियों और पुलिस कर्मचारियों के लिए स्वास्थ्य शिविर जैसी गतिविधियों की व्यवस्था की।
- नागरिकों और पुलिस के बीच क्रिकेट मैचों ने तनाव को खत्म किया और व्यापक रूप से सफल साबित हुआ। (32 क्रिकेट फॉर पीस टीमों ने हिस्सा लिया और फिर यह एक वार्षिक आयोजन बन गया।)
- बस्तियों में अध्ययन कक्ष स्थापित किए गए।

हाल के दिनों में, हम मानव पुस्तकालयों के बारे में सोच सकते हैं जिसमें व्यक्तिगत बातचीत, सामूहिक तौर पर फिल्म देखने, सांस्कृतिक उत्सव, समूह चर्चा, तनाव खत्म के लिए स्थानीय स्तर की बैठकें आयोजित करना शामिल है। मूर्ति अपवित्रता की अफवाहों को भी इस तरह संबोधित किया जा सकता है।

यह मोहल्ला कमिटियों का कार्य है जो महत्वपूर्ण है। नागरिकों की सतर्क भागीदारी और पुलिस कर्मियों की ईमानदार प्रतिबद्धता समुदायों की बेहतरी और शांति बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

सतर्कता की आवश्यकता

हमें यह भी याद रखने की जरूरत है कि बाद के दिनों में, मोहल्ला कमिटियां पुलिस के उच्च अधिकारियों के अनुचित हस्तक्षेप से प्रभावित हुईं, जो केवल राजनीतिक खिलाड़ियों को लेकर आई थीं। एक लोकतांत्रिक राज्य और एक बहुल समाज के सदस्यों के रूप में हमारे जीवन के बारे में कुछ महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि को समझने के लिए जमीनी स्तर पर ध्यान रखना, लोगों के बीच रहना और विभिन्न समूहों के बीच सुनने के अभ्यास को प्रोत्साहित करना महत्वपूर्ण है।

बातचीत के लिए एक शुरुआत करनी होगी, और यह एक ऐसे मुद्दे पर हो सकती है जो सभी को स्वीकार्य हो।

आज, 2022 में, ज्यादा से ज्यादा मोहल्ला कमिटियों की तत्काल आवश्यकता है। विविध और बहुल भागीदारी, पारदर्शी कामकाज और त्वरित और प्रभावी समन्वय सुनिश्चित करने की चुनौती है।

क्या हम आज सामूहिक रूप से ऐसा कर सकते हैं?

मोहल्ला कमिटी के प्रारंभकर्ताओं के उद्धरण/अनुभव

“जब राम लाल और अब्दुल्ला [प्रतिनिधि नाम] इन बैठकों में एक साथ बैठने लगे, तो उनके पास दूसरे समुदाय के प्रति पूर्वाग्रह कम होने लगे। वे समय के साथ दोस्त बनने लगे। राम लाल समझ गए थे कि अब्दुल्ला की पांच पत्नियां और आठ बच्चे नहीं थे, जैसा कि सांप्रदायिक प्रचार में कहा जाता है, लेकिन वह ठीक उसी तरह थे जैसे उनकी एक पत्नी और तीन बच्चे थे। अब्दुल्ला ने राम लाल की तरह अपने घर, मोहल्ला या भिवंडी को बेहतर बनाने के बारे में सोचा और पाकिस्तान के बारे में कभी नहीं सोचा। इसी तरह, अब्दुल्ला ने महसूस किया कि राम लाल भारत से इस्लाम का खात्मा नहीं करना चाहते हैं और उन्हें पानी की आपूर्ति, बिजली और रोजमर्रा के बिल जैसी दिन-प्रतिदिन की चिंताएं हैं ... और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हेड कांस्टेबल ने जाति, पेशा और धर्म के मुहावरे में सैकड़ों दोस्त बनाए थे। यह स्थानीय पुलिस में खुफिया तंत्र को मजबूत करता है। कमिटी के सदस्य नियमित रूप से मोहल्ला बैठक में मौजूद पुलिस प्रतिनिधि को स्थानीय उपद्रवियों और उनके इलाके में किसी भी तरह की परेशानी के बारे में सूचित करेंगे।

(मोहल्ला कमिटी पायनियर सुरेश खोपड़े (पूर्व आईपीएस), पुलिस उपायुक्त (डीसीपी), भिवंडी 1988 में और उसके बाद अतिरिक्त पुलिस आयुक्त (उत्तरी 2009)

“संकट के दौरान कोई भी तटस्थ व्यक्ति, जिस पर भरोसा किया जाता है, पार्टियों के बीच संचार चैनल खोलने में मदद कर सकता है। जब तक लोग बात कर रहे हैं, वे हिंसा का सहारा लेने के लिए सड़कों पर नहीं उतरेंगे। और ये संचार चैनल तब अन्य समस्याओं के समाधान में रचनात्मक कनेक्शन में बदल सकते हैं। ”

(सुशोभा बर्वे, बॉम्बे मोहल्ला कमेटी ट्रस्ट, अनिल सिंह को, द टाइम्स ऑफ इंडिया, 31 मई, 1996)

“अगर दोनों समुदायों के युवा एक साथ खेलते हैं, तो क्रिकेट दो समुदायों के बीच संघर्ष के स्रोत के बजाय एक जोड़ने वाला कारक हो सकता है।” (सुशोभा बर्वे)